कोहरे से निकलते हुए

केदारनाथ कोमल

कोहरे से निकलते हुए

कोहरे से निकलते हुए

केदारनाथ कोमल

उनके नाम
जो अंधेरे में अपने
रक्त का दीप जलाते हैं :
नई सुबह के लिये
छटपटाते हैं !

केदारनाथ कोमल

१७ फरवरी, १९३१ को जमालपुरा, मालेरकोटला (जिला संगरूर-पंजाब) जन्मे। मैट्रिक तक परिस्थितियां अनुकूल न होने के कारण तीन बार पढ़ाई में रुकावट। स्कूल में हिन्दी के लिए मुख्य अध्यापक से लड़ाई लड़े। जीते। अक्तूबर १९४९ से नौकरी।

विश्वविद्यालय पंजाब से एम० ए० (इतिहास)।

बचपन से पढ़ने-लिखने का शौक। १९६० से कविता, लेख, समीक्षा प्रकाशित। अढ़ाई सौ के क़रीब रचनाएं सभी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। सम्प्रति विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली में कार्यालय सहायक।

रचनाएं

कविता :

चौराहे पर
कोहरे से निकलते हुए
बाल गीत (शीघ्र प्रकाश्य)

अनुवाद :

हिमांशु जोशी के चर्चित उपन्यास 'छाया मत छूना मन' के अतिरिक्त कुछ हिन्दी कहानियों का अंग्रेजी में अनुवाद। कुछ कविताएं अंग्रेजी, उर्दू काश्मीरी में अनूदित। कुछ बाल कहानियां अंग्रेजी में प्रकाशित।

शब्द

फिरते हैं वे
मारे मारे
जंगल जगल
सहरा सहरा
पर्वत पर्वत
वादी वादी
हर मौसम में !

नगर नगर
डगर डगर
हंसते गाते
धूम मचाते
मस्ती में अपनी
बढ़ते जाते !

हर मौसम में
सागर सागर
बहते जाते
नभ से ऊंचे
उड़ उड़ जाते
धरती मां की
ममता जगाते
क्या हुआ यदि
घर नहीं उनका
सारी दुनिया
घर है उनका !

शब्द हमारे
गंगा जी के
बहते धारे
हिम्मत वाले
न वे गोरे
न वे काले
आगे आगे
बढ़ते जाते
आंधी तूफ़ानों
में इठलाते !

सब का धर्म
धर्म है उनका
सब का कर्म
कर्म है उनका
सब की भूख
भूख है उनकी
सबकी प्यास
प्यास है उनकी
अबकी आन
आन है उनकी

सबकी शान
शान है उनकी
सबका मुखड़ा
मुखड़ा उनका
सबका दुखड़ा
दुखड़ा उनका
सबकी बोली
बोली उनकी
सबकी होली
होली उनकी
सबकी राहत
राहत उनकी
सबकी चाहत
चाहत उनकी !

ई—६७, सरोजिनी नगर,
नई दिल्ली-११००२३

—केदारनाथ कोमल

अनुक्रम

शब्दों का ख़ुमार

शब्दों को
बड़े प्यार से पढ़ता हूं
शब्दों को
बड़े दुलार से सुनता हूं
शब्दों को
बड़े ख़ुमार से लिखता हूं
क्योंकि
उन्हें पढ़ते-सुनते-लिखते
सदियां बीत गईं
अब
उनके जिस्म से
घाव रिसते हैं
शब्दों के कारण लोग
जलते हैं, कुढ़ते हैं
उम्र-भर घिसते हैं
पिसते हैं।
लोग
शब्द-शब्द पर
बनते-बिगड़ते हैं
शब्दों के कारण
होता है
दंगा-फसाद
कभी झगड़ा
कभी मन-मुटाव तगड़ा
कभी युद्ध
कभी महायुद्ध
कभी विश्वयुद्ध

फिर भी शब्दों के प्रति
कम नहीं हुआ चाव।
इसलिए
शब्दों को
बड़े प्यार से पढ़ता हूं
शब्दों को
बड़े दुलार से सुनता हूं
शब्दों को
बड़े खुमार से लिखता हूं।

अनजाने मोड़ पर

चिन्दी-चिन्दी काग़ज़ से उड़ते
तेज़ हवा में ख़याल !

झोंपड़ियों-फुटपाथों-गलियारों में
रोते-जलते-कुढ़ते सवाल !

कहीं
अनजाने मोड़ पर अचानक
लहराते
सपनों के रूमाल !

दफ्तरों-खेतों-कल-कारखानों में
काम में डूबे
गीतों से लोग,
जाने कब टूटेगा
गीतों का जंजाल !

चौराहे पर हरी-पीली-लाल बत्तियां—
सपनों-उम्मीदों-मायूसी-सी
जलती-बुझती
बुझती-जलती
रह-रह उठता
मन में उबाल !

दर्द जवां है !

सांझ अकेली
दर्द का पहरा
उलझा-उलझा
आसमां है !

दबी-दबी-सी
आग सुलगती
सांसों में
सागर-सी हलचल
प्यार का जानें
चांद कहां है !

रात अंधेरी
पग घायल
इन पांवों नें
हार-हारकर
न हिम्मत हारी
अभी मेरा
दर्द जवां है !

पत्थर की मूर्ति

मैंने जो चाहा
नहीं हुआ
पत्थर की मूर्ति टूट गई
सुनते-सुनते
मेरी दुआ !

जब आंख खुली
चारों तरफ झूमते
रोशनी के फव्वारे थे
आत्मा में चांद
नस-नस में झिलमिल तारे थे
होश आया तो जाना
ज़िन्दगी ही नहीं
हम भी हैं अपने से ख़फ़ा !

जिसे चाहा, पूजा, प्यार किया
उस घर के आंगन-द्वार
धुएं से भर गये,
निगाहों के फूल
एक-एक सब झर गये,
मिला है ऐसा दर्द कि शायद
जिसकी नहीं दवा !

मैं हूं औ' आकाश का सूनापन है
इन नयनों में युग-भर का
गुनाह दफ़न है
मैं जिन्दा हूं, कब किसनें कहा !

मैंने जो चाहा !

भाग्य की आंधी

भाग्य की आंधी में
खो गई
सपनों की झांजन !

नगर की
निर्जीव नज़रों में
खो बैठे
अपनापन !

छंद की रुनझुन
स्वर की ख़ुशबू
लय का नर्तन
ताल का जादू
बुलाता है बार-बार
पर क़दम-क़दम पर
बिखरे हैं
शब्दों के आॅल-पिन !

अरमान हमारे
जलते तारे
फैले-फैले नभ में सारे
जब तक सांस
बाक़ी है एक भी
गिन सकता है
तो तारे गिन !

भाग्य की आंधी में
खो गई
सपनों की झांजन !

सपने

कुछ सपनें
बचपन की रंगीनियों में भटक गये :
कुछ सपनें
लड़कपन के नादान नयनों में
चटक गये !

कुछ सपनें
सपनों की डाल से झर गए :
कुछ सपने
यथार्थ के चौराहे पर मर गये !

कुछ सपनें
कुछ दूर साथ चले फिर
दूर पर्वत पर
कुहासे में खो गये :
कुछ सपनें
बहुत दिन रहे साथ
एक दिन अचानक वे भी
पिता की घुन-खाई रामायण संग
मीठी नींद सो गये !

कुछ सपने
रूप की राहों में मिट गये :
कुछ सपनें
चाहों की चाह में
हाथ की बेजान
लकीरों में सिमट गये !

कुछ सपने
सपनों की भीड़ में खो गये :
दूसरों के कुछ सपने
मेरे हो गये
औ' मेरे सपने
पराये हो गये !

अब
सबके सपने मेरे हैं :
जिधर देखता हूं
जगमगाते सवेरे हैं !

प्यार

मेरे यार
न कर प्यार !
प्यार
भगवान, फूल, खुशबू
था कभी
अब ज़माने के साथ
प्यार भी
बदल गया है
और उसने सांप का
रूप धारण कर लिया है
इसलिए
प्यार से डर !

तेरा ख़याल

तेरा ख़याल
जैसे फूलों की खुशबू में डूबा
चांदनी का बदन !

तेरा ख़याल
जैसे वसंत के आईने में
रूप की फबन !

तेरा ख़याल
जैसे अपने रूप में मदमाती
सूरज की पहली किरन !

तेरा ख़याल
जैसे तारे के सीने में
ठंडी अगन !

तेरा ख़याल
जैसे कस्तूरी की सुगंध में
झूमता-लहकता-बहकता
जंगली हिरन !

तेरा ख़याल
जैसे दीप-मन में
आस्था-भरी जलन !

चांद

दही की टिकिया-सा चांद
गेहूं की बाली-बाली में
उजले गीत जगा गया !

बच्चे की मुस्कान-सा चांद
तन-मन में
घर-आंगन में
चांदी की नदी बहा गया !

प्रेयसी के मुखड़े-सा चांद
रूप की नस-नस में
उजले गीत बिखरा गया !

भिखारी की अनदेखी रोटी-सा चांद
उगा, जगा, रह-रह सिसका
बादल-आंचल में गश खा गया !

कवि की कल्पना-सा चांद
फूल-सा घाव बन खिला
दो घड़ी
धीरे से मुरझा गया !

नदी-दर्पण-सा चांद
सपनों में धूम मचा गया :
लहर-लहर के सीने में
प्रीत के गीत जगा गया !

विज्ञान-सुन्दरी-सा चांद
न मुस्काया, न इतराया,
थोड़ी ठंडक बरसा गया !

शब्दों के जंगल में

शब्दों के जंगल में
कितना अंधेरा है !

खी-खी खी-खी…
खाली बर्तन-सी खोखली हंसी
चेतना के गुंबद में छिपा
शरीफ़ लुटेरा है !

सुबह नहीं
शाम नहीं
(भाषण, नारे, शोर है
और कोई काम नहीं !)
दिन नहीं
रात नहीं
(मैं, मैं, मैं…
मेरे सिवा कोई बात नहीं !)
रंग नहीं
मौसम नहीं
(कुछ समझ में आता नहीं
नहीं-नहीं
आओ, चलें और कहीं !)
सभ्यता का यह
नया सवेरा है !

हांफता संगीत
कांपती धुन
टूटे शब्द

(प्रिय मित्रो !
मेरा कोई मित्र नहीं !)
कौन गाता है गीत ?
मेरा है, मेरा है—
यह ताज़ा गीत मेरा है !

शब्दों के जंगल में···

अंधेरे की झील

खुट
खुट-खुट
खुट-खुट-खुट
जैसे
सोच का चूहा
शरीर को
कुतर रहा हो !

पिछले चंद
दिनों से सर्दी होने लगी है
रात भीगने पर
वह
(शायद सपने में)
उठके बैठ जाता है
घुप्प अंधेरे की
सड़ी-बुसी झील में
घबराहट-बेचैनी से
जूझता
वह
खो जाता है
कशमकश के खूनी
पंजों में !

बदहवास
चीखता-चिल्लाता
जानें कोई
किधर से बिजली की-सी

तेज़ी से आता है
बकता है—
उल्लू, पाजी, गधा,
मक्कार, बेहया, बेशर्म,
चोर, डाकू, लुटेरा,
कमीना, बेईमान,
शैतान
तुम कब तक
कब तक अपने
आपको छलते रहोगे—
मन की व्यथा न कहोगे…
फिर
वह उसे घसीटता हुआ
कंटीली-पथरीली-निर्लज्ज
पहाड़ी की ओर
ले जाता है—
अंधेरा
काली आग
धुआं
धुंध-कोहरा-कुहासा
(मौत का जीवन को दिलासा)
जाने कब हो जाता है सवेरा
(पर छंटता नहीं मन का
अंधेरा)
पत्नी पूछती है—
'तकिया भीगा है—
पानी किसने गिराया ?'
औ' वह
फटी-फटी आंखों से

देखने लगता है
खाली-खाली
आसमान
की तरफ !

एक प्याला चाय

मुनिया की मैली बिंदिया-सा सूरज
आवारा लड़के-सी भटकती हवा
मिलावटी रंगों के
व्यंग्य में डूबे
सुबह के रंग !
पटरी पर
फटी चादर ओढ़े लेटी
भिखारी-सी दिशायें
अकविता के जंगल में तड़पती
अधनंगी औरत !
शराबी के नशे-सा टूटता
नगर
मुरझाए गालों-सी
गलियां !
असंतुष्ट विद्यार्थी से
बौखलाये घर !
पड़ोस में
डबल-रोटी के लिये रोता
नवगीत-सा बच्चा !
रेडियो से
लड़खड़ाते आदर्श-सा
हांफता भजन—
रघुपती राघव राजा राम
(न रघुपति न राघव
पाकेटमारों की बस्ती में
राजा का क्या काम
भूखे पेट को

राम से क्या काम !)
अख़बार में
ख़ून से लतपत खबरों की दुर्गन्ध
सब कांप रहे हैं
मेज़ पर पड़े
चाय के प्याले में
और लेखनी
लिख रही है
अंधेरे-सा गीत
उजाले में···

इज्ज़त

अय भटके हुए लोगो !
तुमनें पिछले जन्म में सचमुच
बड़े अच्छे कर्म किये थे
इस जन्म मैं
भले ही तुम कैसे जिये थे !

घर-घर से
नगरपालिकावाले चंदा इकट्ठा करते हैं
(लावारिस मरनें वालों के लिए !)
लोग खुले दिल से उनकी
झोली भरते हैं !
(कितना बड़ा काम करते हैं !)
इसलिए अय लूले-लंगड़े-अंधे-भूखे-प्यासे लोगो !
तुम बड़े इतमिनान से इस
जीवन को
सफल बना सकते हो !
इस तरह नंगे-भूखे रहकर
मारे-मारे भटकना……
कितना मलाल है
आखिर कुछ तो सोचो
आदमी की इज़्ज़त का सवाल है !!!

आदर्शों के दाग़

कविता की पंक्ति-पंक्ति के
शब्द-शब्द में
सुलगती है आग !

जवान ख़यालों के
जिस्म पर
कितने भद्दे लगते हैं
आदर्शों के दाग !

अंदर ही अंदर
सांप-बल खाता है
धरती का राग !

अब बच के
कहां जाऊंगा
फन-फैलाये खड़ा है
सभ्यता का नाग !

अहिंसा की होली में
खेला जाता है आम आदमी के
रक्त का फाग !

कविता की पंक्ति-पंक्ति के
शब्द-शब्द में
सुलगती है आग !

महंगाई

महंगाई
निम्नवर्गीय क्लर्क की
राशन के लिए
रोती
लुगाई !

महंगाई
मासूम विद्यार्थी की
अध्यापक द्वारा
पिटाई !

महंगाई
संविधान के पन्नों पर
रक्तस्नात कलम से
लिखाई !

महंगाई
रेशमी साड़ी में
लोकप्रिय नर्तकी—
मिस अच्छाई !

महंगाई
बूचड़खाने में
मेमने की चीख़ों पर
हंसता
क़साई !

हरी घास

मारो-लताड़ो
काटो-पीटो
लूटो-खसूटो
जो जी चाहे करो
'मैं सदा जवान हूं—
मैं हरी-हरी घास हूं !'

सदियों से
लड़ते-झगड़ते
टूटते-बिखरते
गिरते-उठते-संभलते
मचलते-बढ़ते
मानव की
आस हूं !

ऊपर, ऊपर, ऊपर
जितना ऊपर
उड़ सकते हो उड़ो
अंत में आओगे
मेरे पास ही
'मैं धरती का
मुसकाता विश्वास हूं !'

बनते-बिगड़ते
हांफते-कांपते
नाचते-टापते
हंसते-गाते

भूगोल का
हुलास हूं !

बनते-तनते
इठलाते-बलखाते
हंसते-गाते
'मैं मानव का
इतिहास हूं !'

मैं हरी-हरी
घास हूं !

अंधेरे की आहट

आओ !
नंगे-भूखे-प्यासो !
तुम भी, तुम भी, तुम भी
सब आओ
सब गाओ !

सब गाओ
एक आवाज़ में गाओ
कि हमारे दिल, दिल नहीं
रेगिस्तान हैं !

गाओ कि हमारे सपने
सपने नहीं
छाया के निशान हैं !

गाओ कि हमारा ख़ून
ख़ून नहीं
पानी है !

गाओ कि हमारा रोना
रोना नहीं
नंगी वेश्या की कहानी है !

गाओ कि हमारी ज़िन्दगी
ज़िन्दगी नहीं
लहरों की थरथराहट है !

गाओ कि हमारा अस्तित्व
अस्तित्व नहीं
अंधेरे की आहट है !

हर दुख संग

हर दुख संग इतना
दुखी होना चाहता हूं
कि मुसकरा सकूं !

हर दर्द संग इतना
छटपटाना चाहता हूं
कि नित नये गीत गा सकूं !

हर आह संग इतना
बिखर जाना चाहता हूं
कि जीवन को गुदगुदा सकूं !

हर अंधेरे संग इतना
सियाह होना चाहता हूं
कि रोशनी बन जगमगा सकूं !

हर थकन संग इतना
थक जाना चाहता हूं
कि उषा संग खिलखिला सकूं !

हर पतझड़ संग इतना
तड़पना-टूटना-बिखरना चाहता हूं
कि वसंत बन लहरा सकूं !

आईने

कितनी सदियों से
जाग रहे हो
आओ, अंधेरे से लिपट
दो घड़ी
सो जायें !

उनकी बात क्या
हम अपने भी
हो न सके,
आओ, अंधे अनाम लोगों के
हो जायें !

मिल पायी न धूप
न फूल
जन्म-जन्म से उड़ती रही
सपनों की धूल,
आओ, सभ्यता के
सियाह जंगल में
खो जायें !

कितने घिनौने हैं
सत्य के आईने के दाग़
आओ
अपने खून से उन्हें
धो जायें !

अन्धा सफर

दूर तक फैला
फैला अंधेरा !
कण-कण में छिपी
ख़ामोशी का
गूंजता-गरजता-चिंघाड़ता समंदर !
नभ से विशाल मस्तिष्क में
आईने की चमक !
थके कदम
लड़खड़ाता जिस्म,
चलना—
बिना राह के चलना !
जलना—
मुसकराकर के जलना !
दिल को अन्धे सफर पर निकले
सदियां बीत गईं !
बुझी-बुझी गुमनामी में
मोमदीप की तरह
अंधेरे रास्तों पर चलना
चलते जाना...
दिल के अन्धे सफर पर निकले
सदियां बीत गईं !

गीत गाते जायेंगे

दूर—
बहुत दूर तक
फैल गई है आग !

इससे पहले
कि जिस्म राख बने
भाग
जितना भाग सकता है भाग !

अंधेरे बन्द कमरों
सूनी घाटियों
जलते मरुस्थलों
काले जंगलों में
ढूंढ़ता फिरता हूं
आत्मा का राग !

वसंत महकेगा
भले ही ज़हरीली आंधी चले
या हज़ार पतझड़
बनकर डसे नाग !

तारों की बात क्या
तारे बहुत देखे हैं
उनसे कहीं भले लगते हैं
दिल के दाग !

कोई सुने न सुने
दर्द की चादर बुने न बुने

गीत गाते जायेंगे !
ख़याल खिलखिलायेंगे !
छंद गुनगुनायेंगे !
खेलने दो ज़मानें को हमारे
सपनों की जवानी से फाग !

बीमार

एक उम्र
बीत गयी
अभावों की झील में
जलते-जलते !
नफ़रत-भरी
राहों पर
चलते-चलते !
न चाहते हुए भी
अपने आपको
छलते-छलते !
हर सुबह
उगने की चाह में
सूरज की तरह
ढलते-ढलते !
लम्बे अर्से से बीमार की
खीज की तरह
पलते-पलते !
मगर
सत्ताईस साल
राष्ट्र के इतिहास में
सत्ताईस घंटों से भी
कम हैं !
शायद
जनता की आंखें
मारे खुशी के
नम हैं !

अजनबीपन की आग

चारों ओर फैली है
अजनबीपन की
सर्द आग !

आस-पास
जानें-पहचानें चेहरों को
अनुभव की सुई से
कुरेद-कुरेदकर देखा है
वे निर्जीव पत्थर-से भी
गए-गुजरे हैं
इस अंधे सफर में
बिखर गया घाव-कलियों का पराग !

बौना आदमी और उसके
गगनचुम्बी भवन
नौकर-चाकर, ऐशो-इशरत
शीशमहल की चकाचौंध-फबन,
नाम-इज़्ज़त-शोहरत की ख़ातिर
दौड़-धूप, तूफानी तड़पन
नन्ही लहर किनारे से बोली—
शोहरत तो है मात्र झाग !

दुख-दर्द-मुसीबत-आहें
इसकी-उसकी—
सब देखकर अन-देखा
काल के माथे पर
काली रेखा,
राग कहां अब
हर चीख़ है मेरा राग !

पत्थर की दीवार

आईने में
चेहरा देखा
जितनी बार
दिल में दर्द
लहराया लहरदार
हर बार !

हंसी नें जब भी
अधर चूमे कहीं बहुत
बहुत पास सिहर
सिहर उठा
मुरझाया प्यार !

गोद में जब
चांद ने ली अंगड़ाई
पलकों की कछार पर
सूखा सागर गरजा
गूंजा-बिफरा
हर बार !

हर सुबह नित
नये चाव से
किया मरने का सामान
मरकर भी ज़माने को
न आया एतबार !

जहां-जहां आंसू
बोये, रक्त सींचा

फूल खिले
खुशबू महकी
नज़र पलटते ही जाने
कब उग आयी
पथ में
पत्थर की दीवार !

आईने में
चेहरा देखा
जितनी बार
दिल में दर्द
लहराया लहरदार
हर बार !

तारे

तारे
कितने सारे !
बिखरे-बिखरे
अरमानों के अंगारे !
थोड़े हमारे
थोड़े तुम्हारे !
रह-रह हंसते
हंस-हंस डसते
जैसे किसी के
नयन रतनारे !
आग में जलते
बिजली से चमकते
टिम-टिम कितने प्यारे !
न कुछ बोलें
न पर तोलें
गुपचुप-गुपचुप करें इशारे !

ज़हर की तलाश है

पांव-पांव में छाले हैं
होंठ-होंठ पर ताले हैं
जीनें के ढंग निराले हैं !

नज़र-नज़र उदास है
आदमी-आदमी बदहवास है
ज़हर की तलाश है !

दामन-दामन जलता है
अरमान-अरमान पिघलता है
दर्द का दौर चलता है !

पर्वत-पर्वत तम फैला है
सागर-सागर ग़म फैला है
धरती का मुख मैला है !

नगर-नगर में शोर मचा
छायी है घनघोर घटा
मौत की मिलती नहीं दवा !

जायें तो किधर जायें
खायें तो क्या खायें
गायें तो क्या गायें !

हर गली है बदनाम गली
सब चीज़ें हैं ज़हर-भरी
शब्दों की अर्थी निकल चुकी !

रोने से भला होगा क्या
मरने की देगा कौन दवा
तू खुद ही अपना ख़ुदा होगा !

सोच की चादर फेंक ज़रा
तू अपने आपको गले लगा
तू प्रगति है, बढ़ता जा !

चांद कितना मद्धम

चांद
कितना मद्धम
कितना उदास
जैसे एक पढ़े-लिखे बेकार
युवक को ज़िन्दगी
न आये रास !

चांद
कितना मद्धम
कितना उदास
जैसे ग़रीब युवती का
चांदी की झंकार पर बिक जाये
अरमानों का हुलास !

चांद
कितना मद्धम
कितना उदास
जैसे विरहिणी की
भरे सावन में
बढ़ती जाये प्यास !

चांद
कितना मद्धम
कितना उदास
सच्चाई के नाम पर
ज़िन्दगी का
क़दम-क़दम पर
टूटता विश्वास !

अारती

अलकों की
लहराती घटायें !
मचलते अरमान !
दर्पणी नयन डूबे
सादगी की झील में !
चंदन शरीर
उमंग ज्वार
महक रहे
बहक रहे !
रंगीन अधरों पर
छंद-भंवरों का नतन !
भावनाओं के दीप
उतारते हैं
बार-बार
तेरे रूप की
आरती !

त

ओ बीते हुए सुनहले
कल को पुकारनें वालो।
तुम जो रोज़-रोज़ सच्चाई की दुहाई
देते हो
क्या तुम कभी सच्चाई तक पहुंचे हो औ'
पीड़ा के जंगल से गुजरे हो !

तु जो रोज़-रोज़ एकता का नारा
लगाते हो
क्या तुमनें पिघलते-टूटते-बिखरते
दिलों में
झांकनें की कोशिश की है !

तुम जो रोज़-रोज़ शान्ति का पाठ
पढ़ाते हो
क्या तुम शान्ति का मतलब समझते हो !

तुम जो रोज-रोज़ सभ्यता के
गीत गाते हो
क्या तुम जानते हो
कि भूखे आदमी और भूखे पशु में
कोई अंतर नहीं रह जाता !

तुम जो ऊंच-नीच की महिमा
गाते हो
क्या तुम जानते हो
हरिजन और सूर्यवंशी के शरीर में
एक ही खून चमकता है !

तुम जो 'धैर्य रखो' के नारे लगाते हो
क्या तुम जानते हो
कि गरीब, पढ़े-लिखे बेकार युवक
आग की लपटों से गुजर रहे हैं !

तुम जो देश-प्यार की दुहाई देते हो
क्या तुम जानते हो
कि कितने लोग
मिलावटी राशन-दवाओं के कारण
रोज़-रोज़ मिनी मौत मर रहे हैं !

तुम जो धर्म-ईमान का वास्ता देते हो
क्या तुम जानते हो
कि धर्म कब का बिक चुका है।

तुम जो महान संस्कृति के ढोल पीटते हो
क्या तुम जानते हो
कि बहरे सुन नहीं सकते !

ओ बीते हुए सुनहले
कल को पुकारने वालो !
सुनो, कान खोलकर सुनो
ज़माना बदल रहा है
ज़माना बदल चुका है।

निराला के प्रति

एक ज्योति
कल्पना-जंगल को
जगमगा गई !

एक कली
अपनी सुगंध से
सारे मधुबन को
शरमा गई !

एक किरन
बंदी छंदों को
रूढ़ियों की क़ैद से निजात
दिला गई !

एक उम्मीद
ज़माने के आंसू
छलका गई !

एक मूर्ति
करोड़ों मूर्तियों में
(बन जीवन-सुगंध)
समा गई !

धरती बनना है

जलो !
जितना जल सकते हो
तुम्हें एक दिन
आग बनना है ।

लहराओ !
झूमो, नाचो, गाओ,
बहकी-बहकी चांदनी में
कांटों को गुदगुदाओ,
तुम्हें एक दिन
हवा बनना है ।

रोओ !
जी भरकर रोओ
दीन-दुःखी-अंधे-बहरे-लंगड़े-लूलों को
कांधे पर उठाओ,
तुम्हें एक दिन
समंदर बनना है ।

उड़ो !
आज़ाद पंछी की तरह
पंख फैलाकर
धड़कन की सरगम में
नया गीत जगाकर !
उड़ो—ऊपर, ऊपर—
तुम्हें एक दिन
आकाश बनना है ।

जागो !
उठो !
चलो !
बढ़ो !
रंग-बिरंगी
सूखी-गीली-रेतीली
हंसती-गातीं-बलखाती
धरती पर,
पूर्व से पश्चिम तक
तुम्हें एक दिन
धरती बनना है।

शायद कोई नहीं

एक-से दिन
एक-सी रातें
कभी भूले-भटके
अपने आप से अधूरी मुलाकातें
हर बार खोखली बातें।

पता नहीं क्या हुआ
इधर मुझे बहुत सपने
आने लगे हैं
मन में अजीब भाव जगे हैं।
जब मुझे रोना चाहिए
तो मैं हंस देती हूं
जब मुझे हंसना चाहिए
तो मैं रो देती हूं।

वसंत कब आता है
कोयल कब कूकती है
(मेरे अंदर गहरे में
कहीं सदियों की बेचैन
बेचैनी हूकती है।)

पता नहीं
मासूम सपनों के
सूख गए हैं ताल
फैल गए हैं चारों तरफ
जादुई अदृश्य जाल।

नगर-नगर गांव-गांव
नज़र आते हैं मशीनी गाल
क़दम-क़दम पर सजी-सजाई यातना
स्वागत करती है !
आत्मा से बे-आवाज़
निकलती है चीख़—
पानी की पर्त-सी चीख़ !
जो खुद ही अपनी छाया से
घबराकर बेहोश हो जाती है।

बड़े-बड़े जलसे
बड़े-बड़े जुलूस
बड़ी-बड़ी भीड़ें
बड़े-बड़े भाषण
मगर नतीजा वही
ढाक के तीन पात।

स्वस्थ आवाज़ों को
कंटीली तारों में कैद करके
दीवारों में बंद कर दिया है।

हर रास्ते, हर मोड़ पर
ठहाके मारता
धोखा नया है !

भागो !
मगर भागकर कहां जाओगे ?
रोओ
मगर अंधा हमदर्दी की भीख देग ?

चिल्लाओ
मगर बहरा सुन पायेगा ?
नींद नही आती
सिर्फ सपने आते हैं !

शायद जिन्दगी एक बहुत
बड़ा रेस्तरां हैं।
रेगिस्तानी नाचघर में
सब नाच रहे हैं।
बांहों में बांहें डाले !
सभी की आंखों पर
कामुक पर्दे लटक रहे हैं।
अधनंगी रोशनी में
मचलती संगीत-लहरें
अंधेरा बढ़ता जाता है।
मैं डूब जाती हूं
अंधेरे के समंदर में !

चलो !
उठो !
बढ़ो !
चढ़ो !
देश हमारा
आंख का तारा
गोरे-काले सब
एक हैं !
शान्ति के गिद्ध
गाते हैं युद्ध का गीत !
सोओ नहीं

रोग्रो नहीं
भागो नहीं
हौसला रखो
देश पर संकट है
तड़-तड़, तड़-तड़, तड़-तड़
धांय-धांय-धांय
अड़ड़-धम
आग
बर्बादी
मौत
संकट खत्म हुग्रा
आंखें खोलीं
औ' खुली-की-खुली रह गईं—
चारों ग्रोर क़ानून के धुएं की दीवारें
टनों भारी ग़म के नीचे
एक दु:खी चेहरा !
मारे घबराहट के
ग्रांखें बंद हो जाती हैं !
खामोशी, खामोशी, खामोशी,
खामोशी अंतिम राग है।

आह !
खामोशी का मांस जलता है
चेतना की चमकदार पगडंडी पर
कोई भारी बूट पहने
तेज-तेज चलता है
छत, दीवारें, मेज, कुर्सी, किताबें—
हर चीज़ पर

मायूसी में निचुड़े हुए
भाव टंगें हैं।

मैं अपने बिस्तर पर नहीं
मेरा जिस्म
हालात के गर्म संदूक में
झुलस रहा है
और मैं चुप हूं !
मेरे खून का हर क़तरा
हवा में अटका है !
पूरी आंखें खोलने पर
साफ़ देखती हूं—
मैं असंख्य नफ़रतों में
घिर गई हूं
मेरी ज़िन्दगी से जैसे
सब कुछ दूर होता जाता है
और दूरी का चेहरा
कफनों के बादल बन
आकाश पर छा गया है।
कहां जाऊं ?
कुछ सूझता नहीं !

असफलताओं की बेचैनी का बोझ
उठाए नहीं उठता
उम्मीद की हर रोशनी में
किसी ने गांठें लगा दी हैं !
एक बात कहना चाहती हूं
उसमें
कई बातें उलझ जाती हैं।

एक गीत में
कितने अगीत उलझ जाते हैं
अख़बार फ़रमाते हैं
एक हम ही नहीं इतने दुःखी
अन्य देश इससे भी अधिक
यातनाओं की आग में जल रहे हैं।

समय के जलते हैं सूराख़
कविता जन्म लेने से पहले ही
मर जाती है
चेतना में टूटते भवनों की ध्वनि।

मुझे क्या हो गया है ?
बात-बात पर
बच्चों की तरह
आपे से बाहर हो जाती हूं।
बात करते-करते जाने
कहां खो जाती हूं !

मुझे नौकरी कब मिलेगी ?
मेरी शादी कब होगी ?
पचीस वर्ष बीत गए ?
मेरे जीवन में
एक वसन्त भी नहीं मुसकाया।

एक भारी किताब
मेरे सिर पर लुढ़क जाती है
मैं नीम-बेहोशी की हालत में
मदद के लिए पुकारती हूं।

मगर कोई नहीं सुनता
शायद कोई नहीं ।
कानों में 'जयहिन्द' के
नारों की फुसफसाहट-सी…
ज़िन्दगी बेशर्म चाहत-सी !

याद !

तेरी याद आयी
सहमे बालक-सी !

चुपचाप
देखती रही
देखती रही…
भटकने लगी
उदासी के रेगिस्तान में
धरती-से प्यासे अधरों
पत्थर-से पांव
आग उगलती लेखनी को देख
खो गई जाने कहां !
औ' पीड़ा से घबराकर
नभ के नयनों में
करोड़ों आंसू-तारे
छलक पड़े !

कोहरे से निकलते हुए

खट...खट...खट...
कोई जवाब न पाकर,
उसने धीरे से दरवाज़ा खोला
अन्दर झांककर देखा और
देखता ही रह गया।
किताबें, पुराने अखबार, बिखरे बर्तन,
पुरानी मेज़, अधटूटी कुर्सी,
अधेड़ चारपाई,
कील में टंगे गन्दे कपड़े,
दीवारों पर लटकते जाले,
बदरंग फर्श पर फैला कूड़ा-कर्कट,
भगवान राम की पुरानी
तसवीर के पीछे
पंछी का घोंसला,
कमरे के कोने में
घुटनों में सिर दिए बैठा युवक
साक्षात् निराशा का नर्तन !

उसने धीरे से
उसके कन्धे पर हाथ रखा।
युवक ने सिर ऊपर उठाया
उदास चेहरा, विषाद गहरा
उलझे बाल,
पुतलियों में डरे-डरे सवाल !
सूखे होंठों पर
खुशी की सोयी लय,
उसके चारों ओर मंडराता भय !

उसने उसकी आंखों में
आंखें डालते हुए पूछा,
उदास क्यों हो ?
निराश क्यों हो ? बात क्या है,
बदहवास क्यों हो ?
युवक कुछ बोला नहीं,
अपने दर्द का पिटारा
खोला नहीं !
वह धीरे से उठा,
पुरानी सुराही से
प्याली में पानी भरा !
और पी गया हौले-हौले !
आंखों में एक चमक लहरा गई,
उदासी की घटा छितरा गई !

उसने कहा, काम नहीं
मिलता तो
काम पैदा किया जाता है।
ऐसे उदासी के अंधेरे में डूबकर
थोड़े ही जिया जाता हैं !
काम नहीं मिलता, तो न मिले,
भाग्य का फूल नहीं खिलता, तो न खिले।
बेकार तुम हथेली की बेजान लकीरों में
उलझे हो,
ये लकीरें गूंगी हैं, बहरी हैं,
कुछ भी तो नहीं बोलेंगी !

तुम चाहो तो इन्हें
बदल सकते हो !

इन्हें बदलो,
नज़र उठाओ,
क़दम बढ़ाओ,
मुसकाओ और बढ़ते जाओ।
आगे, आगे, आगे...
क्षितिज तक
बल्कि उसके भी आगे,
तुम्हारा दिल-दिमाग़ अपना है !
बेकारी झूठा सपना है !

काम कोई भी हो, करो
छोटे से छोटा काम भी काम है !
सच, उसका बड़े काम से
अधिक महत्त्व है !
वही सही, मगर कुछ करो !
छोटे काम से कोई
छोटा नहीं बन जाता,
एक कण धूल में समाकर,
या फूल को चूमकर,
या मूर्ति की गोद में
कण ही रहता है !
और उस कण में छिपी शक्ति से आज सारा
संसार आतंकित है !

तुम्हारा शरीर तो
कितने लाख कणों से मिलकर बना है
क्या हुआ यदि
संशय का कोहरा घना है !

गोर्की की लेखनी
बेकारी में सिंकी,
डिकेन्स नें शराब की बोतलें
साफ़ कीं, सड़क की
रोशनी में उपन्यास जन्मे!
प्रेमचन्द के प्रेम ने
अभावों को ओढ़ा, जिया !
नन्हे लालबहादुर को ग़रीबी की गोद से,
ईमानदारी का लाल मिला !
जहां श्रद्धा, प्रेम, त्याग जन्मा
वहां आनन्द का फूल खिला !

वह बीमार कमरे से
अपनें साथी के साथ
बाहर आया, मगर
उसनें अपनें आपको अकेला पाया !
उसका हमदर्द कोई और नहीं था,
उसके मन की आवाज़ थी !
अब ज़िन्दगी उसके लिए
झूमता साज़ थी...

आत्मकथा

सुनना चाहते हो
सुनकर क्या करोगे
मेरा किस्सा नहीं
सुनाने का !

वे और होंगे जिनकी
आत्मकथा पर
लिखे जाते है ग्रंथ
कोई नाम नहीं मेरी
ज़िन्दगी के अफ़सानें का !

पैदा हुए, अभावों से खेले, जूझते रहे
और जूझते हुए मर गए
ज़िन्दगी नाम नहीं
बूढ़े पीपल की तरह
जिये जाने का !

जीवन का अर्थ
समझाने लगें तो
कई जीवन भी
कम हैं
बस प्यार-भरी एक नज़र
कुछ भी नहीं तो और
समझने-समझाने का !

रेडियो, टी० वी०, फ्रिज
नौकर-चाकर, मोटर-बंगला

शरीर को थोड़ा सुख दे सकते हैं
मगर मेरी
आत्मा का सफर है
वीराने का !

न-नाम, न धाम
न परिचय कोई
हर देश में नाम है
मेरे दीवाने का !

सवालिया निशान

टेढ़ी
मेढ़ी
ऊंची
नीची
अंधेरी
पथरीली
पगडंडियों पर
चलता
गिरता
संभलता
उठता
बढ़ता हुआ देश !

दंगे
फसादों
भीड़ों
जलसे
जुलूसों
नगरों
गलियों
नारों के
समंदर में
मचलता हुआ देश !

गली
सड़ी
पुरानी

अंधी
बहरी
गूंगी
रीतियों की
चट्टानों से
जूझता हुआ देश !

गुलाबी
नीले
पीले
उजले
सांवले
काले
रंगों के
सांचे में
ढलता हुआ देश

चोरी
चकारी
भूख
बीमारी
महंगाई
मिलावट
रिश्वत
भ्रष्टाचार,
अवसरवाद के लकवे का मारा
तड़पता
हांफता
कांपता

जलता-कुढ़ता हुआ देश !

सूखा
सैलाब
उभरता, टूटता, बिखरता
अरमानों का
शबाब
नसों की नदियों में
सिसकती चाव की
शराब
अभावों के नशे से
घबराया हुआ देश !

एक बहुत बड़ा सवालिया निशान
लाख भटकने पर
मिलता नहीं इन्सान
रोज़-रोज़
सभी
ज़हर पीते हैं
चिल्लाते हैं
सभी
देशभक्त
देश के मतवाले मगर
किसे फुरसत है
ज़रा अपने गिरेबान में
मुंह डाले !

सन्नाटे का समंदर

चंद साल
पहले की बात है
उगती उषा देखता था तो
दिनभर सुगंध की तरह मुसकाता था !
सांवली संध्या को
निहार झील में
ज्योति कमलों संग
फूला न समाता था !
रात-रातभर तारों के
गुलशन में
लिपट चांदनी से
खो जाता था !
देख सिसकता भूखा
बादल बच्ची को बासी
रोटी के टुकड़े से
बहलाता था !
अल्हड़ हवा की घुंघराली
अलकों में
सपनों के फूल
सजाता था !
आमों की गदराई सुगंध के
पगले जंगल में
गीत बन
डाली-डाली
इठलाता था !
चंद साल पहले की बात है !

मगर अब
अकेले में ऐसा
लगता है
कि कोई मन में मेरे
सदियों से
लगातार रोता है,
झूठ, छल-कपट का तमाशा
सत्य-अहिंसा के नाम पर
किस अदा से होता है !
आशा के ढोल पीटकर
मासूमियत का खून होता है !

रात को
सन्नाटे के समंदर में
काली करतूतों का तूफान
टूट-टूटकर
बिखर-बिखर
आग उगलता
सीना तानें बढ़ जाता है
आगे, आगे, आगे
इस तूफान में एक
तिनके-सा खो जाता हूं,
अन्याय की कंटीली
शैया पर जाने
कैसे सो पाता हूं !

एक हाथ में शूल
दूसरे में धूल
नयनों में ठण्डी आग का सागर

अधरों पर अपमानित
ज्ञान लिये गाता हूं !
सूरज के जगमग सागर से
चंदा की चमचम चांदनी से
तम के एक तड़पते बिन्दु पर
लौट-लौट आता हूं !
अधरों पर अपमानित
ज्ञान लिये गाता हूं !

आज़ादी के गीत

राशन नहीं मिलता
न सही,
घी नहीं मिलता
न सही,
तेल नहीं मिलता
न सही,
साबुन नहीं मिलता
न सही,
प्यार नहीं मिलता
न सही,
यार नहीं मिलता
न सही,
सत्य नहीं मिलता
न सही,
गणतंत्रता का तथ्य नहीं मिलता
न सही,
भूखे-प्यासे रहकर
दुख-दर्द-बीमारी
भ्रष्टाचार
इस्पाती शिष्टाचार
चोर-लुटेरों के डर के मारे
दरवाज़ा बंद करके
अंधेरे बंद कमरे में
हंसी के हीरे से
मन बहलाओ
आज़ादी के गीत गाओ !!

थके मेडिकल वार्ड में

…थके मेडिकल वार्ड में
भटकी-सी उदासी !
शाम के धुंधलके में
ज़िन्दगी कितनी
निढाल-बासी !

पंखे की हवा का
झर-झर झरना,
सहमी हवा का
फूंक-फूंककर क़दम धरना !

पर्दे का डरे बच्चे-सा कंपकंपाना !
उम्मीद, ना-उम्मीद की कशमकश में
आंसुओं का झिलमिलाना !

दवाईयों की गंध घबराई-सी :
दिलो-दिमाग़ पर धुंध छायी-सी !

दम-बदम घड़ी की
टिक-टिक, टिक-टिक :
दिल की धड़कन चलती है
रुक-रुक, रुक-रुक !

क़रीब होकर भी
दिल की दिल से कितनी दूरियां :
उफ़ ! कौन समझ सकता है
भगवान् की मजबूरियां :

घड़ी की तरफ बार-बार उठती
बेचैन निगाहें :
अंधेरे की बाढ़ में डूबतीं
आरजू की राहें...

मछली-सा खोया व्यक्तित्व

ठहाका !
ठहाके पर ठहाका !!
आसमान सिर पर उठा लिया है
महंगाई के क़साई ने !

आम आदमी
जाल डाले बैठे हैं अपना
मछली-सा खोया व्यक्तित्व
पकड़ने की धुन में
अंतहीन रेत के समंदर किनारे !

अपमान के जाम

भीड़ की तनहाई में डूबे हुए
ज़िन्दगी की बेवफाई से ऊबे हुए लोग !

आहों की धुंध में भटके हुए
आंख में आंसू की तरह अटके हुए लोग !

दुखों की आग में सुलगते हुए
वक़्त की भट्ठी में
इस्पात की तरह पिघलते हुए लोग !

पथरीली राहों पर
ज़ख्मी पांव लिये चलते हुए
सूरज की आग में बदलते हुए लोग !

भूख-बीमारी के सताये हुए
भगवान् को कहने-भर को बनाये हुए लोग !

ज़रा-ज़रा-सी बात पर बिगड़ते हुए
पैसे-पैसे के लिए झगड़ते हुए लोग !

सदियों से बे-मतलब जीते हुए
सदियों से अपमान के जाम पीते हुए लोग !

अय लोगो !
अपने आपको कब जानोगे तुम !
अपनी शक्ति कब पहचानोगे तुम ! !

दफ्तर : चार स्थितियाँ

दफ्तर
रेती का समंदर !

दफ्तर
जी-हुज़ूरी परमो धर्मः
स्वाभिमान को दफ़ा कर !

दफ्तर
वेतन की बात न कर
पत्नी-बच्चों का पेट भर
महंगाई की बात मत सोच
हड़ताल-अनशन न कर
अहिंसावादी सभ्य मौत मर !

दफ्तर
द=दोहरा
फ=(लाल) फीता
त=तैयार
र=रख

अजनबी

शोर है, तमाशा है
मुक्का है, बताशा है
लड़ाई है, झगड़ा है
कमजोर है, तगड़ा है
धोखा है, चोरी है
काली है, गोरी है
घूस है, भाई-भतीजावाद है।
गांधी है, जल्लाद है
अध्यापक है, विद्यार्थी है
सभी स्वार्थी हैं !

भूख है, बेकारी है
रहने को घर नहीं है
आलमारी है !

सड़कें हैं, नंगे पांव हैं
पांव के घाव में
सपनों के गांव हैं !

दिल है, दिमाग़ है
रोम-रोम में रोती
ठंडी आग है !

जुलूस हैं, जलसे हैं
गिरते हैं, मरते हैं
मर-मरकर चलते हैं
सपने हैं, आज़ादी है

चीथड़े हैं, रेशमी खादी हैं
देश है, महानता है
हमारे दिल के सिवा हमें
सारा जग जानता है !

रस घोलता हुआ चांद

नभ की नीली झील में,
डोलता हुआ चांद !
धरती के आंगन में,
रस घोलता हुआ चांद !

प्यार की हंसी में,
खिलखिलाता हुआ चांद !
हुस्न की नस-नस में,
कसमसाता हुआ चांद !

सागर के सीनें में,
लहराता हुआ चांद !
पुजारीं की पूजा में,
मुसकराता हुआ चांद !

कलियों के सीनें को,
गुदगुदाता हुआ चांद !
रसीले होंठों में,
रसमसाता हुआ चांद !

यौवन की पायल में,
झनझनाता हुआ चांद !
प्रीतम के सपनों में,
इठलाता हुआ चांद !

सांसों की ताल पर,
गीत गाता हुआ चांद !
मरमरी बांहों में
बल खाता हुआ चांद !

नए साल की बधाई !

धूल-भरे गांव को
चलते अनथक पांव को !

झूमती चूनर धानी को
तलैया के मीठे पानी को !

चांदनी नहायी रातों को
ख़ुमार भरी बातों को !

सलोनी-संदली बांहों को
नयी उभरती राहों को !

घर लौटते ढोरों को
जगमग सुनहरी भोरों को !

बूढ़े थरथराते हाथों को
गरीब दाल-भातों को

धड़कते कल-कारखानों को
वतन के पासबानों को !

विद्रोही नई पीढ़ी को
सिगार, सिगरेट, बीड़ी को !

चांदनी

हांफती हुई चांदनी
कांपती हुई चांदनी !

सिर धुनती चांदनी
कफ़न बुनती चांदनी !

रोती-रुलाती चांदनी
आग बरसाती चांदनी !

चीखती-चिल्लाती चांदनी
आंसू बहाती चांदनी !

भटकी हुई चांदनी
चटकी हुई चांदनी !

रेगिस्तान-सी चांदनी
हिन्दुस्तान-सी चांदनी !

भूखी-प्यासी चांदनी
अलसाई-बासी चांदनी !

महंगे पेट्रोल-सी चांदनी
कड़वे बोल-सी चांदनी !

जलती हुई चांदनी
हाथ मलती चांदनी !

रुक-रुक चलती चांदनी
झुक-झुक चलती चांदनी !

गिरती-उठती चांदमी
बढ़ती-मुड़ती चांदनी !

आंखें दिखाती चांदनी
दिल जलाती चांदनी !

राशन जुटाती चांदनी
चूल्हा जलाती चांदनी !

जलती-भुनती चांदनी
घूरती-तनती चांदनी !

सकुचाती-लजाती चांदनी
अंग छिपाती चांदनी !

गीत लुटाती चांदनी
कांटे सजाती चांदनी !

अकवि

माना, कि मैं कवि नहीं
लेकिन हर कविता लिखने के बाद
दिल की बेचैनी
बढ़ जाती है,
एक प्रतिमा बनती है
एक प्रतिमा टूट जाती है !

न मंज़िल, न रास्ता, न साथी कोई,
ज़िन्दगी ! हम कहां चले आये हैं !

आग का दरिया

बिखर-बिखर गये सपनें सारे
प्यार का दर्पण टूट गया !

दोस्तों पर क्यों नाज न हो
पसीना बहाकर खून पिया !

दिल का दामन फटा-फटा
दिल का दामन रोज़ सिया !

तहज़ीब के चांद की खातिर
अंधेरा हमनें मोल लिया

आग का दरिया, बर्फ़ का पर्वत
नया नशा नित रोज़ पिया !

मर-मरकर मर न सके
टूट-टूटकर जीवन जिया !

पत्थर के चेहरे

एक समंदर बाहर है
एक समंदर अन्दर है !

यों तो सब घरवाले हैं
पर सारा ज़माना बेघर है !

यों तो हंसते चेहरे हैं
पर हर चेहरा पत्थर है !

झूठ, शैतानी, अवसरवाद
सभ्यता का जेवर है !

आंखों में आंसू अटके हैं
हर आंसू में समंदर है !

संशय, भय, गर्दोगुबार
जीवन विरहिणी का बिस्तर है।

प्रातः बेला

जिधर देखो भीड़ है
मगर आदमी अकेला है !

दिल में रेगिस्तान हैं
बाहर आदर्शों का झमेला है !

न काफ़िला, न मंज़िल कोई
ज़िन्दगी रेत का रेला है !

कुछ भी दिखाई नहीं देता
कौन कहता है, प्रातः-बेला है !

और क्या होगी ज़िन्दगी सुन्दर
दर्द नित नया-नवेला है !

आग-आंसू-धुंध-धुआं
कितना रंगीन मेला है !

लाख वीराने

कौन सुनें दिल के अफ़सानें
दिल में हैं लाख वीरानें !

आशा-मुसकान धुँधली-धुँधली
जीवन-रास्ते हैं अनजानें !

आह की क़ीमत क्या है
पग-पग दौलत के पयमानें !

जलता-रिसता नासूर है जीवन
एक आंसू के लाख फसानें !

आग बरसती है नयनों से
अपनें हो गए हैं बेगानें !

ग़म की कोई बात नहीं
हम भी हैं ग़म के दीवाने !

आग

फैल-फैल गई है आग
राख ही राख है राहों में !

बिखर-बिखर गए हैं स्वप्न
रेगिस्तान है इन बांहों में !

टूट-टूट गए हैं छंद
धुआं-धुआं है चाहों में !

तड़प-तड़प उठी है ज़िन्दगी
नया रूप है गुनाहों में !

पिघल-पिघल गई हैं सदियां
शायद असर नहीं आहों में !

शबनमी गीतों की मासूम बच्ची

सुबह की शाम हो गई है
शाम की भी शाम हो गई है !

एक बात जो तुमनें कही थी
वह बात कहीं खो गई है !

आये आंधी-तूफ़ान कितनें
ज़िन्दगी चट्टान हो गई है !

शबनमी गीतों की मासूम बच्ची
भूखी-प्यासी परेशान हो गई है !

मन की बात अब कौन सुनेगा
हर खुशी परेशान हो गई है !

सुबह की शाम हो गई है
शाम की भी शाम हो गई है !